Ref-No. GGVS-2021/21/137

नर गो-वंश का आर्थिक उपयोग

भविष्य का नया पहलु

श्रीरामशान्ताय

जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र
गोयल ग्रामीण विकास संस्थान

| गो आधारित जैविक कृषि को समर्पित |

राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्थान जयपुर द्वारा प्रमाणित

ग्राम जाखोड़ा, कैथून-सांगोद मार्ग, कोटा - 325001 (राजस्थान)

88759 95439 ggvs@goyalglobal.com www.ggvsglobal.com

गोबर धन

गोबर से निर्मित धूप बत्ती

गोबर से बने दीपक

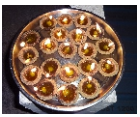

गोबर से बने गमले

कम्पोस्ट खाद

गोबर गैस यूनिट

नर गो-वंश का आर्थिक उपयोग

जैविक कृषि का सम्पूर्ण कार्य गो आधारित है इसलिए गो-वंश का महत्त्व सभी जैविक कृषक जानते ही है। गाय का पंचगव्य अर्थात् दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र जैविक कृषि का मूल आधार है। लेकिन गो-वंश में यह केवल गाय तक सीमित है, मतलब उसके बछड़े या नर गो-वंश पर विशेष ध्यान कृषकों का नही है। इसी वजह से इनके प्रयोग की जानकारी के अभाव में नर बछड़ों की उत्पति के डर से गो-पालन से भी नाता तोड़ा जा रहा है, क्योंकि कृषकों का मानना है कि गाय तो पाल लेंगे लेकिन बछड़ों का क्या करेगें, उनको चारा खिलाने से हमे क्या फायदा, इसी तरह के प्रश्नों के कारण गायों की संख्या धीरे-धीरे कम होती जा रही है वस्तुतः रासायनिक, कीटनाशक दवाओं और ट्रेक्टरों का उपयोग बढ़ता जा रहा है। खेती की लागत बढ़ती जा रही है और धरती माँ का स्वास्थ्य कमजोर होता जा रहा है।

गोयल ग्रामीण विकास संस्थान कोटा के जैविक कृषि अनुसंधान केन्द्र पर उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखते हुए, नर गो-वंश के संरक्षण व सदुपयोग हेतु निम्नलिखित प्रयास किये जा रहे है, जिन्हें किसान आसानी से अपना सकते है।

1. यातायात व्यवस्था में - कृषक के खेत से घर तक पशुओं के चारे, पानी की व्यवस्था के साथ-साथ खाद, बीज, दवाई आदि की व्यवस्था हेतु बैलगाड़ी बहुत आसान विकल्प है, क्योंकि खेतों में बुवाई के बाद जहाँ ट्रेक्टर के द्वारा लम्बे चौडे क्षेत्र को खराब करके आना जाना होता है। वहीं बैलगाड़ी से बिना कोई नुकसान यह सब काम हो जाता है। ट्रेक्टर के लिए ईधन व दक्ष चालक की आवश्यकता होती है, लेकिन बैल चलित गाड़ी से कृषक बिना डीजल सब कार्य कर सकता है। इसके अलावा बैलगाड़ी के आवागमन से खेत की जीवन्तता का प्रर्दशन झलकता ही है।

---

2. खेती में आवश्यक कार्य - छोटी जोत की वजह से कृषक को खेत में जुताई-बुवाई का कार्य किराये के ट्रेक्टर से करना होता है। किराये का ट्रेक्टर छोटे जोत के कृषकों को वरीयता नही देता वस्तुतः कृषि कार्य विलम्ब से होते रहते है। आर्थिक नुकसान भी होता है। लेकिन गो-वंश के नर बछड़ों को बैलों के रुप में प्रशिक्षित करके यह सब कार्य आसानी से कम लागत में सम्पन्न किये जा सकते है।

3. नर गो-वंश के गोबर-गोमूत्र से आय का सृजन -

अ) गोबर - अब तक गोबर का उपयोग खाद तक सीमित रहा है, लेकिन गोबर का उपयोग अन्य कार्यो में भी करके रोजगार सृजन हो सकता है जैसे -

- अग्निहोत्र कण्ड़े
- दीपक
- धूपबत्ती
- गमले
- गोबर गैस स्लरी
- कम्पोस्ट खाद
- गोबर गैस से जनरेटर
- गोबर ईट व प्लास्टर

ब) गोमूत्र - केन्द्र पर हुए प्रयोगो में पाया गया कि नर गो-वंश के गोमूत्र का उपयोग पोषण प्रबन्धन के साथ कीट व रोग नियन्त्रण में भी प्रभावी रहा है। इसके साथ-साथ फिनाइल इत्यादि बनाने में भी उपयोगी रहता है।

---

4 मरणोपरान्त देह से समाधि खाद -

मृत गोवंश की प्राकृतिक मृत्यु के पश्चात् इसको समाधि रुप में जमीन में गाढ़ देते है, 10 माह बाद पुनः उनका इस जगह पर पूरा शरीर मिट्टी में खाद के रुप में बदल जाता है वस्तुतः इस खाद को 1 हेक्टर में उपयोग करके भूमि की उर्वरता बढ़ा सकते है।

---

5 बैल चलित घाणी तेल निकालने हेतु, चक्की आटा व दाल आदि बनाने हेतु, ज्यूस मशीन आदि में नर गोवंश का बैलों के रुप में उपयोग -

वर्तमान समय में प्रचलित मशीने जो विद्युत से संचालित होती है। ये तेज रफ्तार से चलती है वस्तुतः सम्बन्धित उत्पाद की गुणवत्ता प्रभावित होती ही है, साथ ही प्रकृति व पर्यावरण में प्रदूषण भी बढता है। उक्त बैल चलित व्यवस्था से आसानी से तेल निकाला जा सकता है। ज्यूस, आटा, दाल बनाया जा सकता है।

---

6 बैल चलित फव्वारा, रहट आदि -

जिन क्षेत्रों में जल का स्तर ऊपर है और विद्युत व्यवस्था नही है वहाँ नर-गोवंश अर्थात् बैलों से सम्बन्धित पम्प आादि चलाकर आसान व्यवस्था की जा सकती है।

7 चारा काटने की कुट्टी मशीन -

पशुओं को साबुत चारा देने से अवशेष ज्यादा छोडते है व चारे की खराबी बहुत होती है। पशुओं की पाचन क्रिया भी प्रभावित होती है इस हेतु कुट्टी मशीन आसान विकल्प है लेकिन हस्त चलित मशीन से मानव ऊर्जा ज्यादा लगती है और विद्युत चलित मशीन में विद्युत आपूर्ति आवश्यक होती है। इसी के विकल्प पर बैल चलित कुट्टी मशीन उपयोगी साबित हो सकती है।

---

8 निराई गुडाई -

खेती मे कचरे का निस्तारण नही होने की वजह से कृषक को आर्थिक रुप से नुकसान होता है। साथ ही खरपतवार नाशी से धरती बंजर होती जा रही है लेकिन बैल चलित कुल्फा से खडी फसल में कचरे को निकाला जा सकता है, गुड़ाई भी कर सकते है।

---

9 बेड पर पौली मल्च चढाने हेतु -

आधुनिक कृषि में कचरा नियन्त्रण व नमी सरंक्षण हेतु उद्यानिकी फसलों में पॉली मल्च लगाई जाती है, जो श्रमिकों के द्वारा लगाई जाती है लेकिन बैल चलित व्यवस्था से यह कार्य कम समय में अधिक क्षेत्रफल पर आसानी से किया जा सकता है।

---

10 नर गो-वंश के मरणोपरान्त सींग व खुर से कलात्मक आकृतियाँ -

गो-वंश की मृत्यु पश्चात् इनके शारीरिक अवशेष वर्षो तक पड़े ही रहते है। इनको कलात्मक आकृतियाँ आदि बनाकर रोजगार सृजन किया जा सकता है।

---

11 नस्ल सर्वधन हेतु नन्दी व्यवस्था -

वर्तमान में कृत्रिम गर्भाधान की व्यवस्था गति ले रही है लेकिन प्राकृतिक गर्भाधान के परिणाम ज्यादा मिलते है वस्तुतः इस हेतु गाँव-गाँव उत्तम नस्ल के नन्दी के रुप में नर गो वंश का उपयोग किया जा सकता है।

---

12 इको टयूरिज्म में काऊ सफारी -

आधुनिक पीढ़ी को गाँवो में जाना, आनन्द उठाना आदि बहुत अच्छा लगता है। इस हेतु वहाँ बैल गाड़ी से भ्रमण करना भी उन्हे अच्छा लगता है। ऐसे कार्य हेतु बैल तैयार करके उन्हे सःशुल्क उपलब्ध कराये जा सकते है।

बैल चलित व्यवस्था से मल्च

बैलो के सींग से बनी आकृति